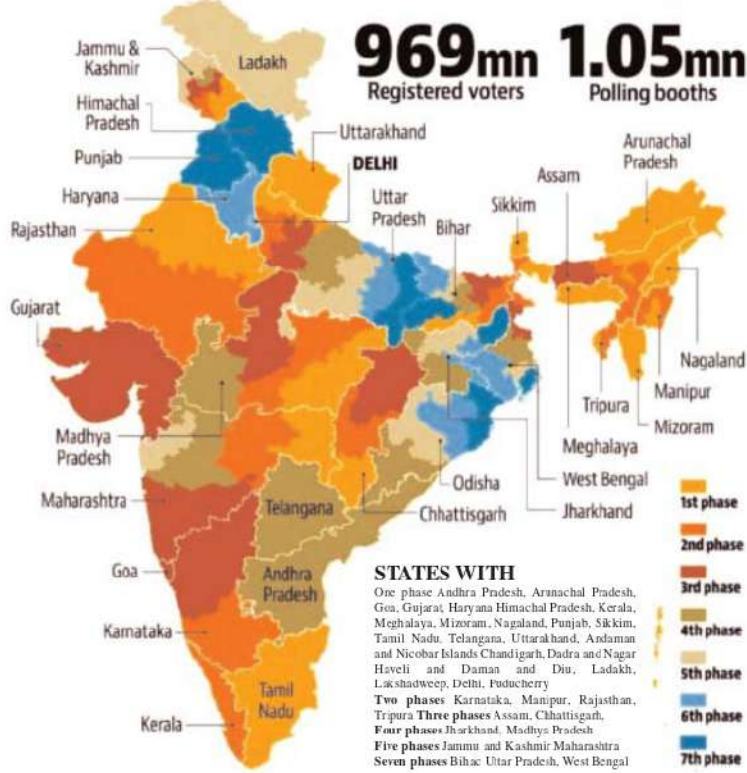


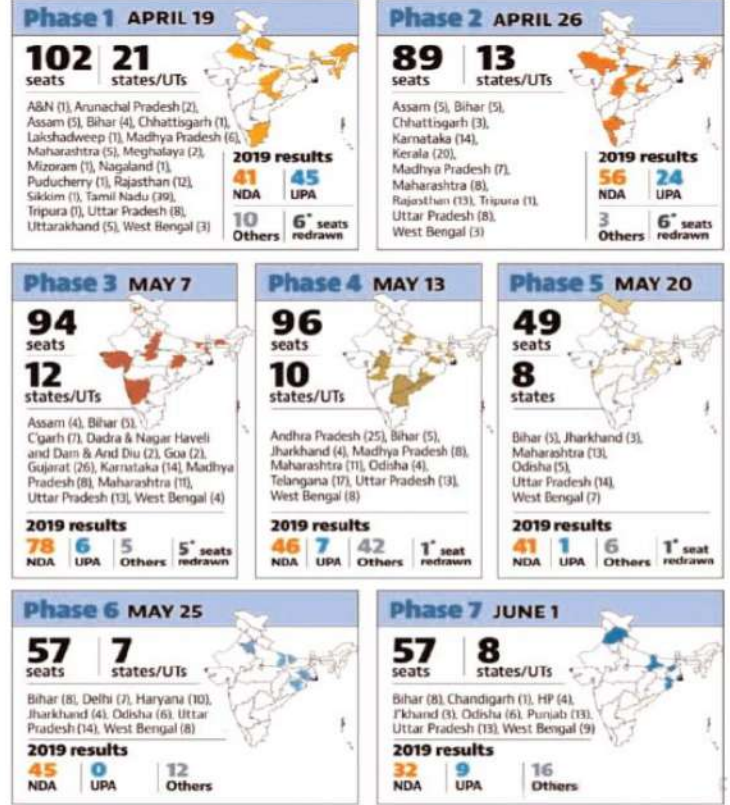


THE NATION'S DATES WITH DEMOCRACY

Nearly a billion people will be eligible to vote as the country goes on to elect representatives for 543 Lok Sabha seats in a gargantuan exercise that will span almost seven weeks from April 19 to June 4 - when the results get announced.



2024 ELECTION SCHEDULE



March 2024 MAJOR DAY CALENDER

- 25 March Holi
- 27 March World Theater Day
- 29 March Good Friday
- 31 March International Transgender Day of Visibility, Easter Day

Important Announcement

Central Bureau of Communication (CBC) has opened for submission of late bills (online as well as physical) of Community Radio Stations. CBC has opened window till 31st March 2024 for the submission of late bills for FY 2023-2024 and 2022-2023. Those CR Stations which have already submitted their bills need not submit again. If any query or help Please contact

Mr. Sandeep Rana
Community Radio Association
Tel 8920058553, Email : HQs
CRA headquarters.cra@gmail.com

खुशहाल देशों में भारत 126वें स्थान पर

लोग आमतौर पर यही कहेंगे कि जो खुशहाल नहीं है, वह बेहाल है। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि मनुष्य अपने स्वभाव की वजह से खुशहाल या दुखी रहता है। प्रसन्नता या खुशहाली मन से उपजती है। कितने ही गरीब अभावग्रस्त रहने पर भी खुश रहते हैं और कितने ही धनवानों को नौद की गोली खाने के बाद भी नर्म मखमली

विद्योने पर नौद नहीं आती। खुशहाली इंसान की सोच से जुड़ी हुई है। यह सारी बातें अपनी जगह हैं लेकिन अर्थशास्त्र की कसौटी पर खुशहाली के पैमाने अलग हैं।

■ शेष पृष्ठ 4 पर

सभी के अलग पैमाने

अमेरिका में खुशहाली का पैमाना वित्तीय समृद्धि से जुड़ा है। फिनलैंड के लोग समग्र खुशहाली के लिए मजबूत लोककल्याण प्रणाली, सरकारी संस्थानों की कुशलता में विश्वास, मुफ्त स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा तक

पहुंच और न्यूनतम भ्रष्टाचार को पैमाना मानते हैं। फिनलैंड के निवासी प्रकृति के साथ मजबूत बंधन तथा अच्छी तरह बनाए गए कामकाज व जीवन के संतुलन को अपने जीवन की संतुष्टि के लिए जरूरी मानते हैं।

उम्र का भी प्रभाव

युवा कभी भी संतुष्ट नहीं होते, क्योंकि उन्हें हर क्षेत्र में अधिक से अधिक बेहतर मुकाम हासिल करने की इच्छा हमेशा उद्दिग्न किए रहती है। उनकी महत्वाकांक्षा में कोई ठहराव नहीं होता। उत्तरी अमेरिका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में 2006-2010 की अवधि में 30

वर्ष से कम आयु के युवाओं के बीच खुशी में काफी गिरावट आई है, वहीं पुरानी पीढ़ियां उच्चस्तर की खुशहाली महसूस करती हैं। जिसने कभी काफी कठिन समय देखा है, वह थोड़ी सुविधाएं मिलने पर भी खुश हो जाता है। उसे यथार्थवादी सोच से खुशी मिल जाती है।

पाकिस्तान से पिछड़ा भारत

विश्व खुशहाली रिपोर्ट या प्रसन्नता सूचकांक में स्कैंडिनेवियाई देश फिनलैंड लगातार 7 वर्षों से अग्रवर्त रहा है। ऐसे शीर्ष 10 देशों में डेनमार्क, आइसलैंड, स्वीडन इजराइल, नीदरलैंड, नार्वे, बेल्जियम, स्विटजरलैंड और आस्ट्रेलिया हैं। पश्चिमी यूरोप में हर उम्र के लोग खुशहाल हैं। अफगानिस्तान विश्व का सबसे नाखुश देश है। यह विस्मयजनक है कि आतंकी गतिविधियों और आर्थिक हालात खराब होने पर भी पाकिस्तान खुशहाली के मामले में भारत से आगे है। भारत विश्व के 143 देशों 126वें स्थान पर है, जबकि प्रतिकूलताओं के बावजूद पाकिस्तान 108वें स्थान पर है। चीन 60वें, नेपाल 93वें स्थान पर रहकर खुशहाली में भारत से बेहतर है।



Chander Ki Awaz @ 90.4 FM Community Radio

Chanderi Ki Awaz, Near Rest House, Chanderi, Ashok Nagar, Madhya Pradesh – 473446



station also cover the theme of health and nutrition and the rights of women in general, while giving a platform to showcase the local talent and folk arts.

Chander Ki Awaz Radio focuses on the following SDGs: SDG 1: No Poverty SDG 3: Good Health and Well-Being SDG 4: Quality



Education SDG 5: Gender Equality SDG 8: Decent

Work and Economic Growth SDG 9: Industry, Innovation and Infrastructure SDG 10: Reduced Inequalities.

Chanderi Ki Awaz broadcasts several programmes which are popular among its listeners. Shows like Subha Hoti Hai Shaam Hoti Hai, Lokgeet and Hamare Fankar are

light-hearted programmes designed to highlight local talent as well as keep the listeners entertained. Other shows are purpose-oriented such as Raahe Rozgar Ki, Apni Baat Radio Ke Saath, Ishwar Allah Tero Naam, Do you Know, Aajivika' and Kuch Lamhe Sehat Bhare which serve as educational media.

The station is supported by an expansive and dedicated team of 29 members. It includes the Station Director, Programme Coordinator, RJs, Technical Support staff and assistant workers, and the team efficiently carries out tasks entrusted upon them. The CRS reaches 32 Gram Panchayats and 55 villages. The approximate active listener population of these villages combined reached up to 1.2 lakhs.

The local community faces several issues which need to be addressed such as employment, education, opportunity feasibility and limited economic growth. The community shows immense potential to grow but requires the right guidance.



Consultation of functional community radios from 10 aspirational districts of Odisha held, shedding light on the significant role community radio can play in driving positive change in the lives and livelihoods of our aspirational communities



मतदाता जागरूकता अभियान में अहम भूमिका निभाने के लिए रेडियो आईआईएमटी 90.4 एफएम को मिला स्वीप आइकन सम्मान।



Mr. Ajay Tigaonkar, Radio Wardha elected as State President of Community Radio Station Maharashtra.



World water Day : Sustaining Life and Celebrating World water Day on 22nd March at Soa Radio 90.4 . The importance of water conservation and sustainable practices were discussed. Mr Ratikanka Mohanty, a renowned expert in water management was in the studio to discuss this crucial topic.



हिमाचल की वादियों में बसे सोलन के 15 साल पूरे कर चुके कम्युनिटी रेडियो के संचालक - डॉ. बी.एस. पंवार

देश में सामुदायिक रेडियो के सफर को सफलता पूर्वक एक लंबा समय तय करने वाले चंद रेडियो ही हैं, जिनमें से एक है सोलन, शिमला का MSPIM संस्थान। पिछले हफ्ते 15 साल पूरे करने वाले इस रेडियो के संचालक डॉ. बी.एस. पंवार आज के अंक में हमारे साथ हैं।



● संज्ञा टंडन

● सबसे पहले आपको रेडियो के 15 साल पूरे होने की बधाई। हम पहले ये जानना चाहेंगे कि आपका संस्थान कितना पुराना है और आप कब से यहां पर रेडियो का संचालन कर रहे हैं?

हमारा संस्थान एम.एस. पंवार इंस्टिट्यूट ऑफ कम्युनिकेशन एण्ड मैनेजमेंट मेरे पिताजी के नाम पर बनाए गए ट्रस्ट एम.एस. पंवार फाउंडेशन द्वारा संचालित है। उनकी इच्छा थी कि मैं कम्युनिटी के लिए कुछ करूं। 2003 में ये संस्थान शुरू हुआ था और यहां रेडियो का संचालन 2009 में आरंभ हुआ था।

● देश में कम्युनिटी रेडियो का कान्सेप्ट कब आया और कबसे सरकार ने इस तरह के रेडियो का आवंटन शुरू किया था?

पहले शैक्षणिक संस्थानों में भारत सरकार ने सामुदायिक रेडियो की प्रायोगिक रूप में शुरुआत की। 2004 में पहला रेडियो अन्ना विश्वविद्यालय में आरंभ हुआ। फिर देश के कुछ चुनिंदा ख्याति प्राप्त शैक्षणिक इंस्टिट्यूट्स में इसको शुरू किया गया। बाद में इसे एनजीओज को देना आरंभ किया गया। 2006 में कुछ रेडियो आए फिर 2009 में हमारा देश का 43वां रेडियो खुला।

● आपसे पहले के 42 रेडियो क्या अभी भी संचालन हो रहा है?

मेरी जानकारी के अनुसार करीब करीब सभी चल रहे हैं।

● आपकी पढ़ाई-लिखाई कहां हुई और आपको कम्युनिटी रेडियो के बारे में जानकारी कैसे हुई थी?

मैंने एमए इंग्लिश की पढ़ाई किरोड़ीमल कालेज से की। मास्टर्स डिग्री पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, लुधियाना से जर्नलिज्म में की और माखनलाल चतुर्वेदी नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ जर्नलिज्म से हमारी एफिलीएशन थी। वहां पर डेवलपमेंट कम्युनिकेशन में नए नए प्रयोग होते रहते थे, उसमें मुझे सामुदायिक

सोलन का हमारा रेडियो मी न्यूजीलैंड में, ऑस्ट्रेलिया में, कनाडा में, अमेरिका में लोग सुनते हैं। मैं तो बहुत आशावादी हूँ, मैं समझता हूँ आने वाला समय जो है कम्युनिटी रेडियो का है। आज देश में 450 से ज्यादा रेडियो खुल चुके हैं, लगातार खुल रहे हैं। जितने कम्युनिटी रेडियो बढ़ेंगे, जितनी संख्या बढ़ेगी, उतनी ही पहुँच बढ़ेगी...

रेडियो के बारे में भी जानकारी हुई कि रेडियो किस तरह से डेवलपमेंट में सहायक हो सकता है, तो मेरी उसी समय से इस तरह में रुचि रही थी। कम्युनिटी रेडियो का कान्सेप्ट तो उस समय तक नहीं आया था क्योंकि ये 84-86 की बात है। मेरे दिमाग में ये बात थी कि रेडियो को कम्युनिटी डेवलपमेंट के लिए इस्तेमाल किया जाए। जब मैंने 2003 में संस्था शुरू की, तो मेरे दिमाग में तब भी ये बात रही। उस वक्त मैंने सोचा कि कुछ करें। 2004 में जब कम्युनिटी रेडियो का कान्सेप्ट आया तो जिज्ञासा हुई, मैंने पढ़ा इसके बारे में, जानकारी उपलब्ध की। इस बीच 'वनवर्ल्ड' नाम की संस्था के साथ मेरा संपर्क हुआ और उनके सहयोग से हमने एक पायलट प्रोजेक्ट बनाया, जिसमें हमने पहाड़ के ऊपर के 12 गांव लिए, जहां सड़क भी नहीं जाती थी। वहां कम्युनिटी रिपोर्टर्स चुने गए और हमने वहां से रिकॉर्डिंग, नेरोकास्टिंग शुरू की। आकाशवाणी शिमला से साप्ताहिक समय लिया और प्रसारण शुरू किया। ऐसा करने से समझ में आया कि रेडियो कैसे चल सकता है, पहाड़ों में इसकी कैसे-कहां तक पहुंच हो सकती है। इस अनुभव के बाद हमने 2007 में रेडियो के लिए आवेदन दिया। उस समय बहुत कठिन था रेडियो मिलना, बहुत सारा पेपर वर्क होता था और गवर्नमेंट भी बहुत क्लियर नहीं थी कि किस तरह से रेडियो का आवंटन हो। तो 2009 में जाकर हम अपना रेडियो शुरू कर पाए। हिमाचल के अलावा भी जितने पहाड़ी इलाके हैं,

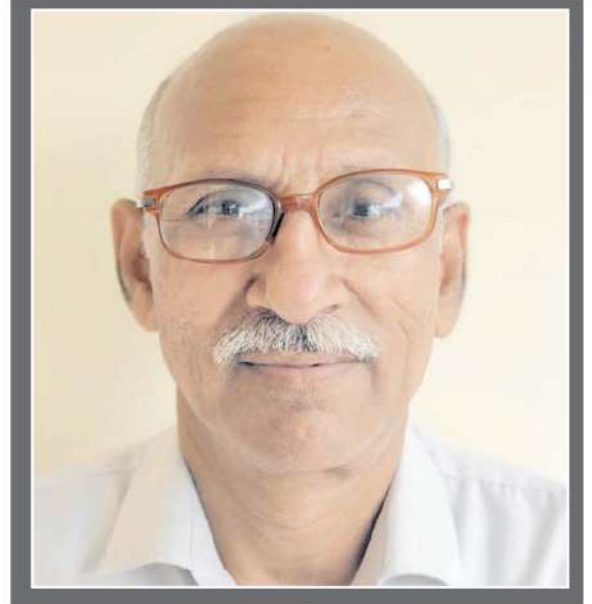
उन्में पहला रेडियो था।

● कम्युनिटी रेडियो में फिल्मी गीत बजाने की मनाही है, कॉपीराइट की परेशानी है, ऐसे में मनोरंजन के लिए क्या किया जा सकता है?

कम्युनिटी रेडियो का कान्सेप्ट शायद हम लोगों को समझा नहीं पाए हैं इसमें फिल्मी गीत तो कम से कम चलने चाहिए, क्योंकि कम्युनिटी रेडियो का जो कान्सेप्ट है वह है अपने समुदाय को सशक्त करना। हम लोकल टैलेन्ट्स को आईडेंटिफाई करें, जिनको ऑल इंडिया रेडियो में, कमर्शियल रेडियो में भी अवसर नहीं मिल पाते। ऐसे बहुत सारे पतिभाशांली कलाकार होते हैं हमारे समुदाय में, जो मंच ठूँठते हैं तो हमको उनको प्लेटफॉर्म देना चाहिए। हमारी सोच में और एक धारणा बनी हुई है कि फिल्मी गाने हम चलाएंगे तभी रेडियो कामयाब होगा तो यह भ्रमि है। कम्युनिटी रेडियो की इतनी इनकम नहीं है कि वह कॉपीराइट्स लाइसेंस खरीद के गाने चला सके और उनका मकसद भी नहीं है गाने चलाना। हमें मंथन करना पड़ेगा कि हम रीजनल, लिंक्विस्टिक बेसिस पर हम कलाकारों को चुनें और उनके सहयोग से रेडियो में मनोरंजन प्रदान करें। हमको समझना होगा कि कम्युनिटी रेडियो की अपनी एक पहचान है जिसमें उस क्षेत्र विशेष की स्थानीय संस्कृति और लोकसंगीत को बढ़ावा देना है।

● कम्युनिटी रेडियो के साथ एक शब्द और जुड़ा है नेरोकास्टिंग, इसके बारे में आपसे कुछ जानकारी चाहेंगे।

शब्द में ही अर्थ छुपा हुआ है, नेरो का अर्थ संकरा और कास्टिंग



का अर्थ है प्रस्तुत करना। रेडियो के लिए कहा जाता है कि वो बस एक बार बोलता है, लेकिन कम्युनिटी रेडियो का जो फर्ज है वो समाज को जागरूक करना है। साथ में हमें समाज के उन लोगों की प्रतिक्रिया भी लेनी है, और सरकार तक पहुंचानी होती है। एक बार बोलने वाल रेडियो अगर समाज के लोग नहीं सुन पाए हों तो हमें अपने समुदाय तक पहुंचना होता है। पंचायत में, गांव में, महिलाओं, बुजुर्गों, किसानों आदि के बीच पहुंचकर उनके लिए खास मकसद के लिए बनाए गए कार्यक्रम उनको रूबरू सुनाए जाते हैं। उसकी पुष्टि भी समझाते हैं, उनसे प्रतिक्रियाएं भी मिल जाती हैं।

● आप कम्युनिटी रेडियो संगठन की पूर्व अध्यक्ष हैं और आपके कार्यकाल में सामुदायिक रेडियो की इस युनिटी से क्या फायदा हुआ है क्या उल्लेखियां रहीं?

ये जो संगठन है सीआरए, वह 2011 में शुरू हुआ था। 12-13 साल हो चुके हैं। बहुत अच्छा काम कर रही है ये संस्था। ये एक ऐसा प्लेटफॉर्म है यह जिसके माध्यम से सारे कम्युनिटी रेडियो एक साथ जुड़ते हैं और प्रोजेक्ट्स हम डालते हैं, मिनिस्ट्रीज में जाकर। कम्युनिटी रेडियो के बारे में स्टेट होल्डर में एडवोकेसी करते हैं, अवेयरनेस क्रिएट करते हैं और पूरे देश के जितने कम्युनिटी रेडियो हैं उन सबको हम एक साथ लेकर चलते हैं। पिछली जितनी बार भी एसोसिएशन की जो एक्सीक्यूटिव कमेटीयां बनीं, सबने अच्छा काम किया, कुछ ना कुछ आगे लेकर गए। सिर्फ 40 कम्युनिटी रेडियो से शुरुआत हुई थी 2011 में, आज 250 रेडियो से ज्यादा

मेम्बर्स हैं। जो 2 साल का हमारा कार्यकाल रहा, बहुत अच्छी टीम थी। काफी काम हुआ। कोई ऐसा महीना नहीं गया जब कुछ उपलब्धि न मिली हो। महीने में कम से कम दो बार मैं दिखी गया और हमने कम्युनिटी रेडियो उसके बारे में सेक्रेट्री लेवल के जो ऑफिसर्स हैं और जो मीडिया के इंचार्ज हैं, सबसे मुलाकात की, प्रोजेक्ट्स दिए।

● रेडियो की प्रीकनसी से सामुदायिक रेडियो बहुत काम क्षेत्र में सुने जा सकते हैं, टेक्नोलॉजी से आपको क्या उम्मीदें नजर आती हैं?

पहले तो हम सबको टेक्नोलॉजी की बहुत कम जानकारी थी और संभावनाएं भी बहुत कम नजर आती थी, अब जैसे-जैसे यह एनालॉग से डिजिटल में आया तो इसमें ब्रॉडकास्टिंग का भी बहुत बड़ा स्कोप है कम मैनपावर में भी हम बहुत अच्छे तरीके से रेडियो चला सकते हैं। टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करके हम रेडियो को एक सकारात्मक दिशा में ले जा पा रहे हैं। हमें उसका फायदा लेना चाहिए। पॉडकास्टिंग आजकल बहुत पॉपुलर हो रही है। एप के माध्यम से भी बहुत से रेडियो दुनिया भर में सुने जा रहे हैं। सोलन का हमारा रेडियो भी न्यूजीलैंड में, ऑस्ट्रेलिया में, कनाडा में, अमेरिका में लोग सुनते हैं। मैं तो बहुत आशावादी हूँ, मैं समझता हूँ आने वाला समय जो है कम्युनिटी रेडियो का है। आज देश में 450 से ज्यादा रेडियो खुल चुके हैं, लगातार खुल रहे हैं। जितने कम्युनिटी रेडियो बढ़ेंगे, जितनी संख्या बढ़ेगी, उतनी ही पहुँच बढ़ेगी और कम्युनिटी रेडियो का भविष्य उज्वल होगा।



2016 में शुरू किया था रेडियो स्टेशन 'मयूर'

अभिषेक अरुण मीडिया के एक युवा छात्र रहे हैं जो अपनी शुरुआती पढ़ाई बिहार के छपरा सारण जिला से पूरी की। अंग्रेजी साहित्य में स्नातक और उसके बाद मास कम्युनिकेशन में पोस्ट ग्रेजुएशन करने के बाद ये दिल्ली चले गया नौकरी की तलाश में। दिल्ली-मुंबई में मीडिया में नौकरी की। रेडियो, टीवी और सिनेमा के अलग अलग अनुभव हासिल किए। फिर एक दिन अचानक नौकरी छोड़ी और अपने गृह जिला छपरा आ गए और रेडियो मयूर को शुरू किया। कम्युनिटी रेडियो का आइडिया तब आया जब इनके बड़े भाई जो की एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म मेकर हैं, ने कम्युनिटी रेडियो के कांसेप्ट को इन्हें बताया, फिर अभिषेक ने छपरा में जी जान लगा कर कुछ स्थानीय युवाओं के साथ इसकी शुरुआत की। जब रेडियो शुरू हुआ तब अभिषेक 26 वर्ष के थे।

शुरुआती दौर में अभिषेक ने कई चुनौतियों का सामना किया। जैसे युवाओं को इस फील्ड का कोई अनुभव नहीं था जो जुड़ना चाहते थे। रेडियो कौन सुनेगा ये एक बड़ा सवाल था। जहां भी लोग



सुनते कि छपरा में रेडियो शुरू होने वाला है लोग हसते कि इस आधुनिक जमाने में रेडियो क्यों कोई सुनेगा, और अभिषेक को कहते की पढ़ने-लिखने और बढ़िया नौकरी तलाशने की उम्र में तुमने रेडियो क्यों खेल लिया?

लेकिन अभिषेक और उनकी टीम ने हिम्मत नहीं हारी, छपरा के हर एक गांव गली, मुहल्ले, कोचिंग स्कूल में जाकर अलग-अलग समूहों में बताने लगे की हम रेडियो शुरू कर रहे हैं, आपका साथ चाहिए। ये कम्युनिटी रेडियो है जहां सिर्फ आपकी बात होगी, आपके सोशियो इकोनॉमिक डेवलपमेंट की बात होगी।

रेडियो को चलाने के लिए दो चीजें जरूरी थी एक तो लोकल टैलेंट दूसरा थोड़े पैसों की भी

आवश्यकता। खर्च निकालने के लिए स्थानीय व्यवसायियों ने रेडियो मयूर को कुछ विज्ञापन दिया और लोकल टैलेंट वालंटियर बन कर जुड़े।

अबतक रेडियो मयूर ने 200 से ज्यादा युवाओं को ट्रेड करके इस फील्ड में स्किल्ड बनाया है और उनमें से कई आज अच्छे जगह कार्यरत हैं।

रेडियो मयूर ने कोरोना काल में भी अपना जबरदस्त प्रभाव छोड़ा और उस वक्त रेडियो को सिर्फ दो लोग चला रहे थे, एक अभिषेक और उनका एक सहयोगी। रोज सरकारी अपडेट्स देना, लोगों को मोटिवेट करना, व्यवहार परिवर्तन करना, वैक्सिन लिए लोगों को राजी करना, लोगों की बोरियत मिटाना, उस दौरान बच्चों का मानसिक संतुलन बनाए रखना आदि में अभिषेक ने अपने रेडियो से लोगों की बहुत मदद की। स्वास्थ्य मंत्रालय के प्रधान सचिव श्री लव अग्रवाल ने अभिषेक का वीडियो ट्वीटर पर शेयर करते हुए लिखा था कि-ऐसे कार्यों से प्रेरित होना चाहिए। स्थानीय स्तर पर जिलाधिकारी और प्रशासन हमेशा से हैं

अब तक दो अंतर्राष्ट्रीय दौरे

2022 में अभिषेक को कम्युनिटी मीडिया और रेडियो में कार्य करने के अनुभव को लेकर मलेशिया एक मीडिया कांफ्रेंस में बुलाया गया, जहां उन्हें विशेष रूप से पुरस्कृत किया गया। उसके बाद अभिषेक ने अपने दो सदस्यों को थाईलैंड भेजा जहां उन्हें एक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में शिरकत करने और एडवांस ट्रेनिंग लेने का मौका मिला। आज देश के कई बड़े आयोजनों में अभिषेक को कम्युनिटी मीडिया के एक्सपर्ट के रूप में भी आमंत्रित किया जाता है, जहां ये अपने अनुभव साझा करते हैं।

अभिषेक और रेडियो मयूर के कार्यों को सहायते रहते हैं।

मत्दान जागरूकता, पोषण अभियान, फाइलेरिया उन्मूलन, कौशल विकास, महिला सुरक्षा, बेहतर स्वास्थ्य, क्वालिटी एजुकेशन आदि पर रेडियो मयूर खासा ध्यान देता है और हजारों परिवार का जीवन बदल चुका है।

पृष्ठ 1 के शेष

खुशहाल देशों में...

खुशहाली की रैंकिंग आम जनता की अपने जीवन की संतुष्टि के आकलन के साथ-साथ प्रति व्यक्ति जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद), सामाजिक सहयोग, जीवन प्रत्याशा, स्वतंत्रता, उदारता तथा भ्रष्टाचार जैसे मानकों पर निर्धारित की जाती है।

दुखी देश कौन-कौन से

विश्व के सबसे दुखी, अभावग्रस्त देशों की सूची में अफगानिस्तान, लेबनान, लेसोथो, सिंप्रा लियोन, कांगो, जिम्बाब्वे, बॉत्सवाना, मलावी, इस्वातिनी और जाम्बिया का समावेश है। भारत बहुत बड़ी आबादी, बेरोजगारी से जूझते युवा, पिछड़े हुए ग्रामीण व आदिवासी क्षेत्र कुछ ऐसे पहलू हैं जो उसे खुशहाल नहीं होने देते। शहरों की संपन्नता, सड़कों पर कारों की बढ़ती तादाद, बड़े-बड़े मॉल्स खुशहाली दिखाते हैं, लेकिन वहां भी युवाओं में बेहतर अवसरों के लिए छटपटाहट है। जो अपनी स्थिति से असंतुष्ट महसूस करता है, वह खुशहाल कैसे हो सकता है? जब भौतिकवादी जरूरतें और संसाधन कम थे तब भी लोग खुद को खुशहाल इसलिए अनुभव करते थे क्योंकि तब उनके पास संतोष रूपी धन था। आज की आपाधापी भरी जिंदगी में बहुत कुछ हासिल करने पर भी लोग खुद को खुशहाली से दूर महसूस करते हैं।

Dr. Rashmi Ammembala stands as a beacon of dedication and innovation in the realm of community radio, wielding her extensive expertise to steer Radio Manipal towards



greater heights of impact and engagement. Of course, the advice and directions of Dr. Padmarani, Director of Manipal Institute of Communication, MAHE, Manipal, play a pivotal role in this endeavor. As the station manager, her role transcends mere administration; she is the driving force behind every facet of Radio Manipal's operations, from programming to outreach initiatives.

With a rich academic background spanning Sociology, Journalism, Tulu, and Development Studies, complemented by a pioneering PhD in Community Radio, the first of its kind in India, Dr. Rashmi brings a unique blend of theoretical knowledge and practical insight to her work. Her academic journey reflects a deep commitment to understanding the socio-cultural dynamics that shape community radio's role in fostering dialogue, empowerment, and social change.

Beyond her academic pursuits, Dr. Rashmi's professional journey spans over two decades, encompassing diverse domains such as print and visual media, education, and social work. This multidisciplinary experience

Dr. Rashmi Ammembala

Assistant Professor & Co-ordinator, Radio Manipal CRS, Manipal Institute of Communication, MAHE, Manipal, Karnataka. Founding President, CRA Karnataka Chapter.

equips her with a holistic understanding of community needs and aspirations, which she channels into Radio Manipal's programming ethos.

At the heart of Dr. Rashmi's mission is a fervent belief in the power of community participation. She champions inclusivity, actively involving listeners in shaping the station's content and agenda. Through innovative program formats and interactive initiatives, she endeavors to amplify the voices of marginalized communities, fostering a sense of ownership and belonging among Radio Manipal's audience.

Dr. Rashmi's research endeavors stand as a testament to her scholarly rigor and intellectual curiosity. With over 30 published research articles, she not only contributes to the academic discourse surrounding community radio but also leverages her findings to inform and enrich Radio Manipal's programming strategy.

One of her most notable achievements is the 'KatheKelona' program series, a groundbreaking collaboration with the Kannada SahithyaParishath. This initiative not only celebrates Karnataka's rich literary heritage but also serves as a platform for emerging writers to showcase their talent. By tran-



scending linguistic and cultural barriers, Dr. Rashmi fosters a sense of cultural pride and unity among Radio Manipal's diverse listenership.

However, Dr. Rashmi's impact extends far beyond the confines of Radio Manipal. As the founding President of the Community Radio Association, Karnataka chapter, she spearheads advocacy efforts to promote the growth and sustainability of community radio initiatives statewide. Her visionary leadership inspires a new generation of radio practitioners, lay-

ing the groundwork for a vibrant and inclusive community media ecosystem.

Yet, amidst her myriad responsibilities, Dr. Rashmi remains grounded in her commitment to community service. Her tireless efforts in organizing blood donation drives exemplify her ethos of compassion and solidarity, embodying the spirit of altruism that defines Radio Manipal's ethos.

In her multifaceted role as a radio presenter, mentor, and community leader, Dr. Rashmi Ammembala embodies the transformative potential of community radio as a catalyst for social change and empowerment. Her journey is a testament to the enduring power of passion, perseverance, and the unwavering belief in the transformative potential of community-driven media.



CRA
Community Radio Association

CRA Newsletter Coordination Team

Name	Name of Radio Station/ org.	State
Sangya Tandon	Arpaa Radio	Chhattisgarh
Nidhi Sharma	Capital FM	Chandigarh
RJ Sangmitra	Desh Bhagar CR	Chandigarh
Sachin	Radio Gunjan	Himachal Pradesh
Srestha Bhattacharya	Radio Bundelkhand	Madhya Pradesh
Sandeep Rana	Community Radio Association	New Delhi